ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

कुर्किहार से प्राप्त मूर्तियों में अंतर्निहित कला का प्राचीन मगध का इतिहास के साथ अंतर्संबंध

रवि भारद्वाज

शोध छात्र, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

प्रोफेसर पार्थ सारथी

शोध पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग, ए. एम. कॉलेज, गया, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

कुर्किहार नामक स्थान गया जिले का एक प्रमुख पुरातात्विक स्थल है। यह नवादा–गया मुख्य सड़क मार्ग पर अवस्थित है। प्राचीन काल में इस क्षेत्र को कुक्कुट प्रदेश के नाम से जाना जाता था। ह्वेनसांग और इत्सिंग ने भी अपने यात्रा विवरणों में कुक्कुटपादगिरी नामक स्थल की चर्चा की है जो कुर्किहार नामक स्थल से साम्यता रखता है।

इस स्थल के संबंध में नवीनतम अभिलेख विष्णुगुप्त के मानगरगाँव अभिलेख से जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेख में अविमुक्तजन नामक व्यक्ति इस प्रदेश का निवासी था। यह क्षेत्र प्राचीन मगध क्षेत्र का भाग हुआ करता था। बेगलर तथा मेजर ने भी इस स्थल का वर्णन बौद्ध स्थल के रुप में किया है। इस क्षेत्र से अनेक पुरातात्विक महत्व की सामग्रियाँ प्राप्त हुई हैं। इन सामग्रियों में बौद्ध धर्म के विकास एवं मगध के ऐतिहासिक बिन्दुओं के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है।

विभिन्न विद्वानों ने इस स्थल का विभाजन तीन टीलों के रुप में किया है। तीनों टीलों की ऊँचाई अलग–अलग है। इन टीलों में राम–जानकी मंदिर के टीले को पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित कर दिया गया है। अन्य दो टीलों का पूर्व में ही अनाधिकृत रुप से मकान आदि निर्माण कार्य के कारण उत्खनन कर दिया गया है। यहाँ से प्राप्त मूर्तियों को यहाँ के निवासियों द्वारा मंदिरों में सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। इन मंदिरों को देवी–स्थान तथा छोटी देवी–स्थान नाम दिया गया है। बहुत सारी मूर्तियों को दीवार के साथ सीमेंट आदि लगाकर स्थायित्व प्रदान कर दिया गया है। मंदिर के अतिरिक्त भी अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई थी जिन्हें कलकत्ता संग्रहालय, पटना संग्रहालय, बोधगया संग्रहालय तथा नवादा संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। मंदिरों में संग्रहित मूर्तियों के संबंध में प्रस्तुत आलेख में विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

कुर्किहार से प्राप्त होने वाली मूर्तियों में सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्ति है, जिसके उपर लेख अंकित है। यह मूर्ति देवी स्थान में बाहर की ओर लगी हुई है। बुद्ध की यह मूर्ति (चित्र संख्या–02) भूमि स्पर्श मुद्रा में विराजमान है। मूर्ति के शीर्ष पर कंधे की तरफ दोनों ओर स्तूप बनाया गया है जबकि निचली तरफ दोनों ओर घोड़ा बना हुआ है। घोड़ा बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण से संबंधित माना जाता है जबकि स्तूप महापरिनिर्वाण को परिलक्षित करता है। मूर्ति के निचले भाग में सिंह का आसन है जिसमें तीन सिंह अलग–अलग मुद्राओं में विराजमान हैं। मूर्ति का निर्माण काले बेसाल्ट पत्थर से किया गया है। उत्कीर्णित अभिलेख सिद्धमात्रिका लिपि में लिखा गया है।

दूसरी मूर्ति भी देवी स्थान में ही संरक्षित है। इस मूर्ति की पूजा देवी के रुप में यहाँ के निवासियों के द्वारा किया जाता है। इसी कारण इस मंदिर को देवी स्थान का नाम दिया गया है। मूर्ति को कपड़े से लपेटकर रखा

गया है जिससे शारीरिक विन्यास का पता लगा पाना कठिन है फिर भी बाल विन्यास से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह बुद्ध की मूर्ति है।

चित्र संख्या–01

ललितासन मुद्रा में अवलोकितेश्वर बुद्ध की अभिलिखित प्रतिमा (6ठी से 9वीं शताब्दी) सौजन्य–देवी स्थान कुर्किहार

चित्र संख्या–02

भूमि स्पर्ष मुद्रा में बुद्ध की अभिलिखित प्रतिमा (6ठी से 9वीं षताब्दी) सौजन्य–देवी स्थान कुर्किहार

एक अन्य मूर्ति बुद्ध के अवलोकितेश्वर (चित्र संख्या–01) की प्रतिमा से संबंधित है। इस प्रतिमा में प्रभामंडल की विद्यमानता है। प्रभामंडल के चारों तरफ अभिलेख उत्कीर्णित है। अवलोकितेश्वर बुद्ध के करुणामय स्वरुप को परिलक्षित करता है। बुद्ध कमलासन पर ललितासन मुद्रा में विराजमान हैं । एक अन्य मूर्ति जो कि बुद्ध के भूमि स्पर्श मुद्रा से संबंधित है उसमें भी बुद्ध कमलासन पर भूमि स्पर्श मुद्रा में विराजित हैं।

बुद्ध की इन मूर्तियों के अतिरिक्त देवी तारा की मूर्ति, एवं जांभल की मूर्ति इन मंदिरों में संग्रहित रखे गए हैं। एक अन्य मूर्ति जो हेव्रज की मूर्ति है वह भी देवी स्थान में सुरक्षित रखा गया है। विभिन्न शिवलिंग भी इस स्थान से प्राप्त हुए हैं। इसके अगल–बगल के क्षेत्रों से एक मुखी शिवलिंग की प्राप्ति हुई है। मनौती स्तूपों की संख्या तो इतनी है कि लोग इसे अपने घरों तक में संरक्षित कर पूजा–अर्चना करते हैं। प्राचीन स्तंभखंड भी यत्र–तत्र बिखरे हुए दिखलाई पड़ते हैं जिसके ऊपर कलाकृतियों का निर्माण किया गया है।

ये सभी मूर्तियाँ व्रजयान संप्रदाय से संबंधित मानी जाती हैं। मगध के क्षेत्र में व्रजयान संप्रदाय तथा तंत्र–मंत्र का विकास हो चुका था। इन मूर्तियों का काल निर्धारण छठी शताब्दी से लेकर आठवीं शताब्दी तक किया गया है। यहाँ से मूर्तियों का इतने अपार मात्रा में प्राप्त होने से ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यह क्षेत्र मूर्ति निर्माण कला का कारखाना हुआ करता होगा। साथ हीं अनेक मूर्तियों पर उपलब्ध लेखों से ऐसा ज्ञात होता है कि उन मूर्तियों का उपयोग दान हेतु किया जाता होगा क्योंकि अधिकांश लेखों में दानदाताओं के नाम को अंकित पाया गया है। पत्थरों के प्रयोग से पता चलता है कि मूर्ति निर्माण में काले बेसाल्ट पत्थर का उपयोग किया गया है जबकि उस प्रकार के पत्थर के पहाड़ निकटवर्ती क्षेत्रों में नहीं मिलते हैं। इसके अलावा बलुआ पत्थर भी आस पास के क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है।

बुद्ध काल में ऐसी किंवदती है कि सुजाता का खीर खाने के बाद बुद्ध उसके साथ इस स्थान पर आये। इस स्थान पर कश्यप जी से उनकी मुलाकात हुई जो कुक्कुटपादगिरि पर्वत पर तपस्या किया करते थे। यहाँ बुद्ध ने लगभग 6 दिनों तक निवास किया था जिससे इस क्षेत्र की काफी जन उपलब्धि हासिल हुई थी। मूर्तिकलाओं में भी यहाँ से बुद्ध की अधिकांश मूर्तियाँ भूमि स्पर्श मुद्रा में प्राप्त हुई है। भूमि स्पर्श मुद्रा बुद्ध के ज्ञान के साक्षी के रुप में भूमि को बनाये जाने से संबद्ध कर देखा जाता है। बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के उपरांत इस स्थान पर निवास किये थे इसलिए भी इस स्थान पर बुद्ध की इन मूर्तियों के निर्माण कार्य को जोड़कर देखा जा सकता है।

कुर्किहार में बौद्ध के अतिरिक्त शैव तथा वैष्णव मत से संबंधित मुर्तियाँ भी प्राप्त होती है। देवी स्थान में शिवलिंग तथा इसके आस–पास के क्षेत्र में एकमुखी शिवलिंग की प्रतिमा प्राप्त हुई है। नवग्रह पट्टिका भी देवी स्थान से प्राप्त हुआ है। विष्णु की प्रतिमा भी इस क्षेत्र से प्राप्त हुई है। इन मूर्तियों के एक ही स्थान पर मिलना अत्यंत दुर्लभ विषय वस्तु माना जा सकता है। यदि इस स्थान को मूर्ति निर्माण कला का कारखाना मान भी लिया जाय तो भी इतना अवश्य है कि यह स्थान सभी धर्मों के मूर्ति क्रय का स्थान था। साथ ही इस स्थान पर विदेशी यात्रियों द्वारा यात्रा किया जाना इस स्थान के बौद्ध धर्म के साथ समन्वय स्थापित करने का प्रयास स्वरुप माना जा सकता है। अतएव कहा जा सकता है कि यह स्थान भले ही बौद्ध धर्म का पवित्र स्थल रहा हो किन्तु यहाँ सभी धर्म समुदाय के लोग आपसी सौहार्द के साथ यहाँ निवास किया करते थे।

आज के परिप्रेक्ष्य में भी यदि देखा जाय तो यहाँ के हिन्दू धर्मावलंबी बुद्ध की पूजा अर्चना बड़े हीं आदर के

साथ करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। हिन्दू धर्म की इस प्रकृति के कारण हीं वृहत स्तर पर यहाँ बुद्ध की पूजा अर्चना की जाती थी बौद्ध धर्म में तंत्र–मंत्र के आगमन के फलस्वरुप नये देवी–देवताओं का उदय होना भी स्वाभाविक था। इन देवताओं में हेव्रज आदि की मूर्तियाँ भी यहाँ से प्राप्त होना इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मगध के क्षेत्र में मंत्रायण आम बात हो चुकी थी। तंत्र–मंत्र एवं जादू–टोना यहाँ की आम बात थी। मनौती स्तूपों का वृहत स्तर पर उत्पादन किया जाना भी इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि मगध का समाज अपने मनोकामना को पूर्ण होने हेतु मनौती माँगने का प्रावधान रखता था। मनौती माँगना बुद्ध के उपदेशों के विपरीत प्रतीत होता है। मनोवैज्ञानिक रुप से मनौती माँगा जाना एक अंधविश्वासी परंपरा माना जा सकता है। इस क्रम में मगध के समाज की कल्पना इस रुप में की जा सकती है कि यहाँ सभी धर्मों के मान्यताएँ तथा विश्वास कहीं न कहीं एक दूसरे से मिलते जुलते नजर आते थे। वैष्णव धर्म की अवतारवादी परिकल्पना ने धार्मिक साम्यता के इस रुप को और निकटवर्ती करते हुए बौद्ध धर्म को अपने अंदर समाहित कर लिया।

इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रतिस्पर्धा के भाव भी मगध के क्षेत्र में मूर्तियों के निर्माण आदि कार्यों को देखने से मिलने लगता है। तारा देवी की मूर्ति के आधार पर हिन्दू धर्म में देवी दुर्गा की मूर्ति का निर्माण किये के प्रमाण उपलब्ध होते हैं जिसका अनुपालन कुर्किहार आदि क्षेत्रों में भी किया जाने लगा था। उसी प्रकार पौराणिक देवता कुबेर की प्रतिमा के आधार पर बौद्धों ने जांभल की प्रतिमा का निर्माण प्रारंभ किया। वास्तव में यह धार्मिक प्रतिस्पध र्ा से कहीं अधिक धार्मिक समन्वय का प्रतीक माना जा सकता है जिसमें हिन्दुओं ने देवी पूजन को बौद्धों से अपनाने का प्रयास किया तथा बौद्धों ने धन के देवता के पूजन को अपना लिया।

परवर्ती गुप्त शासकों से लेकर पालकाल तक इस क्षेत्र की कलात्मक अभिवृद्धि होती रही। मानगरगाँव अभिलेख के आधार पर भी मगध का यह क्षेत्र आदित्यसेन एवं उसके वंशजों के अधीन माना जा सकता है। विष्णुगुप्त को इतिहासकारों ने आदित्यसेन का पौत्र बतलाया है। इसके आधार पर कुर्किहार का क्षेत्र विष्णुगुप्त के अधीन था। मगध का साम्राज्य राजनैतिक कारणों से यद्यपि भले ही सीमित होता चला गया था किन्तु सांस्कृ तिक तथा कलात्मक विरासत के रुप में कुर्किहार जैसे बौद्ध केन्द्रों ने मगध की गरिमा को वैश्विक स्तर पर अक्षुण्ण बनाये रखा था।

अतएव कहा जा सकता है कि कुर्किहार का क्षेत्र मगध के क्षेत्र में धार्मिक सौहार्द तथा कलात्मक अभिवृद्धि का क्षेत्र रहा है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. एल एस एस, ओमैली,: बंगाल डिस्ट्रिक्ट गैजेटियर्स गया, लोगोस प्रेस, नई दिल्ली 1907,
2. पी सी, रायचौधरी,: बिहार डिस्ट्रिक्ट गैजेटियर्स गया, सचिवालय प्रेस, पटना 1957,
3. अलेक्जेंडर, कनिंघमः आर्कियोलोजिकल सर्वे इंडिया रिपोर्ट, टवस 1, गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस, शिमला , 1871,
4. सैमुएल बीलः बुद्धिस्ट रिकार्ड्स आफ द वेस्टर्न वर्ल्ड, केगन पाल, लंदन 1906
5. डी आर, पाटिल,: दी एंटीक्वारियन रिमेंस इन बिहार, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना 1963,
6. डॉ भगवंत, सहाय,: द इन्स्क्रिप्शन्स आफ बिहार, रामानन्द विद्या भवन, पटना 1983,
7. बैजनाथ सिन्ह, विनोद,: मगध (इतिहास और संस्कृति), जैन संस्कृति संशोधन मंडल, बनारस हिंदू युनिवर्सिटी, बनारस 1954
8. बेनी माधव, बरुआ,: गया एवं बोधगया टवस 2, इंडियन रिसर्च इंस्टीच्यूट, कलकत्ता 1934,
9. धीरेन्द्र, कुमारः भारतीय बौद्ध केन्द्र, जानकी प्रकाशन, पटना,2003,
10. सिरिस चन्द्र, चौटर्जीः मगध आर्किटेक्चर एण्ड कल्चर, कलकत्ता युनिवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता , 1942,

11. सत्यकेतु विद्यालंकार,: प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली 2024.

12. वासुदेव शरण, अग्रवालः भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 1966.

Cite this Article

"रवि भारद्वाज;प्रोफेसर पार्थ सारथी", "कुर्किहार से प्राप्त मूर्तियों में अंतर्निहित कला का प्राचीन मगध का इतिहास के साथ अंतर्संबंध", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

Journal URL- https://www.researchprojournal.com/

DOI- 10.70650/rpimj.2025v1i200006